कला-संगीत इस्लाम विरोधी कैसे

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

दंगल गर्ल जायरा वसीम के सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोस्ट ने हलचल मचा दी है। उनके हवाले से एक्टिंग छोड़ने का एलान किया गया है। उन्होंने लिखा है कि 'बॉलीवुड में उनके पांच साल पूरे हो गए हैं। किस तरह पांच साल पहले लिए गए इस फैसले ने उनकी पूरी जिंदगी बदल दी। उनको यहां शोहरत और लोगों का खूब प्यार मिला। यहां तक कि यूथ के लिए रोल मॉडल बन गई, लेकिन उन्हें यह सब कभी नहीं चाहिए था।' उन्होंने आगे यह भी लिखा है कि 'मैं भले यहां फिट हो रही हूं लेकिन मैं यहां की नहीं हूं। मैं अपनी इस पहचान से खुश नहीं हूं। यह मुझे मेरे ईमान से दूर कर रहा है।' जायरा के इस एलान से उनके प्रशंसक हतप्रभ हैं। वे समझ नहीं पा रहे हैं कि जायरा वसीम का यह फैसला उनके अंतर्मन से लिया गया है या किसी दबाव का नतीजा है। जायरा ने यह भी लिखा है कि 'जब मैने ऐसे माहौल में काम करना जारी रखा जो लगातार मेरे ईमान में दखल दे रहा था, तो मेरे धर्म के साथ मेरा रिश्ता खतरे में पड़ गया था।'

आतंकियों ने न तो भारत की आजादी की लड़ाई से और न ही दुनिया के महान संघर्षों से उदारता सीखने का प्रयास किया। वे जनता पर हथियार और धमकी के माध्यम से नायकत्व थोपना चाहते हैं और नारा आजादी का लगाते हैं। इसीलिए मलाला से लेकर जायरा वसीम तक प्रतीक तत्काल उनके निशाने पर आ जाते हैं, जो रचनात्मक संदेश के जरिये नारी को कुछ मुक्ति देते हैं।

गौर करें तो जायरा ने अपने पोस्ट के जरिए स्वीकार किया है कि कला और संगीत का रास्ता इस्लाम विरोधी है और उसने इसे अपनाकर गुनाह किया है। बहरहाल यह जायरा की मर्जी है कि वह इसे किस रूप में लेती हैं लेकिन कला और संगीत कभी भी सीमाओं की खोल में नहीं रहा और न ही उसे किसी धर्म, मजहब और संस्कृति के डोर से बांधा गया। इस्लाम के 1400 साल के इतिहास में संगीत रचा-बसा है। जब तुर्क भारत आए तो अपने साथ ईरान और मध्य एशिया के समृद्ध अरबी संगीत परंपरा को भी ले आए। उसे बुलंदियों तक पहुंचाया और कई रूप-रंग, नाम दिए। लेकिन दुर्भाग्य कि 21 वीं सदीं में जब संगीत का पवित्र प्रवाह दुनिया को सराबोर कर रहा है तो इसे इस्लाम का विरोधी के तौर पर देखा जा रहा है। समझ से परे है कि जब हजारों साल के इतिहास में कभी भी कला और संगीत को इस्लाम के खिलाफ नहीं माना गया तो अचानक आज इस्लाम का विरोधी कैसे हो गया।

सूफी संतों और मुस्लिम शासकों ने कभी भी गीत-संगीत को इस्लाम से अलग करके नहीं देखा और न ही उसे गैर इस्लामिक माना? अगर कला और संगीत गैर इस्लामिक होता तो क्या वे उसे अपने आचरण में ढालते? दिल्ली सल्तनत के शासक बलबन, जलालुद्दीन, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के दरबारों में संगीत सभाओं का आयोजन होता था। बलबन का पुत्र बुगरा खां और पौत्र कैकूबाद के समय राजधानी की गलियां और सड़कें गजल गायकों से भरी रहती थी। इतिहासकर बरनी ने उस समय के मशहूर संगीतकारों शाहचंगी, नूसरत खातून और मेहर अफरोज का जिक्र किया है जो अपने संगीत से समां बांधते थे। अलाउद्दीन खिलजी जो इस्लाम के प्रति आस्थावान था, के दरबार में महान कवि एवं संगीतज्ञ अमीर खुसरो को संरक्षण हासिल था। खुसरो ने भारतीय और इस्लामी संगीत शैली को मिलाकर यमन उसाक, मुआफिक, धनय, फरगना और मुंजिर जैसे राग-रागनियों को जन्म दिया। उसने दक्षिण के महान गायक गोपाल नायक को दरबार में आमंत्रित किया। मध्यकालीन संगीत परंपरा के संस्थापक अमीर खुसरों को सितार और तबले के आविश्कार का जनक माना जाता है। उसने ही भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचालित किया।

प्रचलित ख्याल गायकी के आविष्कार का श्रेय जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की को दिया जाता है। रबाब, सारंगी, सितार और तबला इस काल के मशहुर वाद्ययंत्र थे। फिरोज तुगलक के बारे में जानकारी मिलती है कि जब वह गद्दी पर बैठा तो 21 दिनों तक संगीत गोष्ठी का आयोजन किया। क्या ये सभी उदाहरण इस बात के गवाह नहीं हैं कि कला और संगीत इस्लाम का एक अभिन्न अंग रहा है? कला और संगीत को गैर इस्लामिक बताने वाले लोगों को स्पष्ट करना ही चाहिए कि क्या सल्तनतकालीन सुल्तान मुसलमान नहीं थे? अगर उस समय संगीत गैर इस्लामिक नहीं था तो आज अचानक कैसे हो सकता है? मुगलकालीन शासक अकबर के दरबार में तानसेन जैसे प्रसिद्ध संगीतज्ञ को संरक्षण हासिल था। अबुल फजल ने तानसेन के बारे में लिखा है कि उसके जैसा गायक हजार वर्षों में कभी नहीं हुआ। मियां की टोड़ी, मियां की मल्हार, मियां की सारंग, दरबारी कान्हड़ी तानसेन की प्रमुख रचनाएं हैं। अकबर के समय में ध्रुपद गायन शैली एवं वीणा का प्रचार हुआ।

अबुल ने अकबर के दरबार में 36 गायकों का उल्लेख किया है। तानसेन का पुत्र विलास खां जहांगीर के दरबार का प्रमुख संगीतज्ञ था। शाहजहां अपने दीवान-ए- खास में प्रतिदिन कला एवं गीत-संगीत सुना करता था। क्या ये सब मुगलकालीन शासक मुसलमान नहीं थे? या उनकी इस्लाम में आस्था नहीं थी? सच यह है कि कला और गीत-संगीत इस्लाम की शानदार परंपरा का हिस्सा रहा है। सूफी संतों ने संगीत से रूहानी ताकत हासिल की। शेख मुईनुद्दीन चिश्ती संगीत को आत्मा का पौष्टिक आहार कहा है। अबुल फजल ने आईने अकबरी में 14 सूफी सिलसिले का पूरा उल्लेख किया है। सुहरावर्दिया शाखा में शेख मूसा एक महत्वपूर्ण सूफी संत हुए जो सदैव स्त्री के वेश में रहते हुए नृत्य और संगीत में अपना समय व्यतीत करते थे। सूफी संत ईश्वर को प्रियतमा एवं स्वयं को प्रियतम मानते थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर की प्राप्ति कला और गीत-संगीत से ही की जा सकती है। सवाल लाजिमी है कि फिर कला और संगीत दीन और ईमान से दूर कैसे कर सकता है।

कट्टरता के कोहरे में पाक ही नहीं भारत भी घिरता जा रहा है और इसका ताजा प्रमाण है 'दंगल' फिल्म की अभिनेत्री जायरा वसीम द्वारा फेसबुक और इंस्ट्राग्राम पर अपनी कला की बढ़ती प्रशंसा के लिए माफी मांगना। यह अच्छी बात है कि जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से लेकर आमिर खान, जावेद अख्तर और अनुपम खेर जैसी फिल्मी हस्तियों ने जायरा के पक्ष में बयान दिया है और उसे हर तरह का समर्थन देने का भरोसा दिलाया है लेकिन, 16 साल की लड़की को अच्छे काम के लिए माफी मंगवाना न तो इस्लाम के बड़प्पन का प्रतीक है और न ही कश्मीर की आजादी के दीवानों के। कश्मीर की आजादी का जो आंदोलन अपने को सेक्यूलर और कश्मीरियत का हिमायती बताता था अब कट्टपंथी जेहनियत में कैद होता जा रहा है। उसे इस बात से खतरा महसूस होता है कि उसके भीतर सरकारी और गैर-सरकारी सफलता का कोई और आदर्श विकसित हो और युवा पत्थर फेंकने और बंदूक उठाने की बजाय उस दिशा में बढ़ें।

जब उग्रवादी बुरहान वानी के मुठभेड़ में मारे जाने के बाद कुछ चैनलों ने कभी भारतीय सिविल सेवा टॉप करने वाले आईएएस अधिकारी शाह फैजल को रोल मॉडल बनाने की कोशिश की तो उन्होंने भी भयभीत होकर विरोध किया था। उनका कहना था कि भारतीय चैनल घाटी में राष्ट्रवाद को मजबूत करने की बजाय उसे कमजोर कर रहे हैं और उन लोगों को भी तनाव में डाल रहे हैं जो देश के लिए अपना दायित्व मुस्तैदी से निभाना चाहते हैं।

चिंतन

पानी का आपातकाल

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

भारत इस वक्त भयंकर जलसंकट और सूखे का सामना कर रहा है। प्रकृति से छेड़छाड़ और उसकी नेमतों की अनदेखी करने का नतीजा हम भुगत रहे हैं। लेकिन इस स्थिति की गंभीरता संपन्न वर्ग शायद तभी समझेगा, जब सरकार घोषणा कर दे कि भारत में इस वक्त पानी का आपातकाल लागू है। झुग्गी-झोपड़ियों और निचली बस्तियों में रहने वाले तो अक्सर ही ऐसे आपातकाल से जूझते हैं। वे सुबह-शाम पानी के टैंकरों का इंतजार करते हैं, और कड़ी जद्दोजहद से गुजारे लायक पानी हासिल करते हैं। पहले जो तालाब, बावड़ियां, पोखर उनके लिए उपलब्ध थे, उन पर भूमाफिया, प्रशासन और सरकार की गिद्धदृष्टि पड़ी और वे उनसे छीन लिए गए। जलस्रोतों के खत्म होने या मार दिए जाने के कई मार्मिक किस्से प्रायः हर शहर में मिल जाएंगे। विकास के नाम पर जलस्रोतों की बलि अब भस्मासुर साबित हो रही है। भारत में जलसंकट तेजी से बढ़ रहा है। इसकी बानगी तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश ऐसे कई राज्यों में देखने मिल रही है। मानसून देश के कुछ इलाकों में आ गया है, कुछ तपती गर्मी में बारिश की बाट जोह रहे हैं। लेकिन अगर भरपूर बारिश होती भी है, तो भी अगली गर्मियों के बाद फिर सूखे जैसे हालात बनेंगे, क्योंकि पानी को सहेजने की अपनी परंपरा और संस्कृति दोनों को हम पीछे छोड़ चुके हैं, रही-सही कसर शीतलपेय कंपनियों जैसे उद्योग और पानी माफिया पूरी कर रहे हैं। लेकिन सरकार अब भी जनता पर ही यह दायित्व डाल रही है कि वह जलसंरक्षण करे। वैसे यह बात सही है कि जल, जंगल समेत तमाम प्राकृतिक संसाधनों को बचाना हर इंसान की जिम्मेदारी है और इसलिए समाज इस दायित्व से बरी नहीं हो सकता। लेकिन यह बात भी उतनी ही सही है कि इन संसाधनों का लालच भरा दोहन मुट्ठी भर लोग कर रहे हैं और खामियाजा गरीब लोग भुगत रहे हैं। इसलिए जब प्रधानमंत्री स्तर से जलसंरक्षण की बात आती है, तो उनसे यह सवाल भी किया जाना चाहिए कि सरकार पानी माफिया पर लगाम लगाने के लिए क्या कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने सत्ता की दूसरी पारी के पहले मन की बात कार्यक्रम में जलसंरक्षण का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जल की महत्ता को सर्वोपरि रखते हुए देश में नया जल शक्ति मंत्रालय बनाया गया है। इससे पानी से संबंधित सभी विषयों पर तेज़ी से फैसले लिए जा सकेंगे। मेरा पहला अनुरोध है, जैसे देशवासियों ने स्वच्छता को एक जन आंदोलन का रूप दे दिया। आइए, वैसे ही जल संरक्षण के लिए एक जन आंदोलन की शुरुआत करें। देशवासियों से मेरा दूसरा अनुरोध है, हमारे देश में पानी के संरक्षण के लिए कई पारंपरिक तौर-तरीके सदियों से उपयोग में लाए जा रहे हैं। मैं आप सभी से, जल संरक्षण के उन पारंपरिक तरीकों को शेयर करने का आग्रह करता हूं। मोदीजी के मन की बात को कितने लोग सुनते हैं, और कितने समझते हैं, यह बड़ा सवाल है। वैसे उन्होंने जलशक्ति मंत्रालय से जो उम्मीद बंधाई हैं, वे कितनी पूरी हो पाएंगी, इसमें संदेह है। ऐसे ही ऐलान गंगा सफाई को लेकर भी किए गए थे। लेकिन न गंगा जैसी पौराणिक महत्व की नदियां बच पा रही हैं, न झीलें और तालाब।